2 जयशंकर प्रसाद

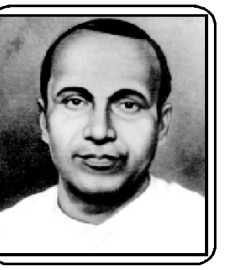

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–सन् 1889 ई0।
- **जन्म-स्थान**–काशी।
- **पिता**–देवीप्रसाद।
- **मृत्यु**–सन् 1937 ई0।
- छायावादी युग के लेखक।

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में 30 जनवरी, 1889 ई0 को हुआ था। इनका परिवार 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध था। प्रसादजी के पिता देवीप्रसाद स्वयं साहित्य-प्रेमी थे। इस प्रकार प्रसादजी को जन्म से ही साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। प्रसादजी ने 9 वर्ष की आयु में ही एक कविता की रचना की जिसे पढ़कर इनके पिता ने इन्हें महान् कवि बनने का आशीर्वाद दिया। प्रसादजी ने बाल्यावस्था में ही अपने माता-पिता के साथ देश के विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा की। कुछ समय बाद ही इनके माता-पिता की मृत्यु हो गयी। इनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध बड़े भाई श्री शम्भूनाथ जी ने किया। सर्वप्रथम इनका नाम 'क्वींस कालेज' में लिखाया गया, किन्तु वहाँ इनका मन नहीं लगा और घर पर ही योग्य शिक्षकों से अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। जब आप 17 वर्ष के थे तभी बड़े भाई शम्भूनाथ जी की मृत्यु हो गयी। इन्होंने तीन शादियाँ कीं, किन्तु तीनों ही पत्नियों की असमय मृत्यु हो गयी। इसी बीच इनके छोटे भाई की मृत्यु हो गयी। इन सभी असामयिक मौतों से यह अन्दर-ही-अन्दर टूट गये। संघर्ष और चिन्ताओं ने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचायी। क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण 15 नवम्बर, 1937 ई0 को 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

प्रसादजी ने विषम परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को बनाये रखा। आपने स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ा। घर पर ही वेद, पुराण, इतिहास, दर्शन, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और हिन्दी का गहन अध्ययन करते हुए हिन्दी की सेवा में जुट गये। इन्होंने भारत के उज्ज्वल अतीत को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। प्रसादजी ने भारतीय इतिहास एवं दर्शन का अध्ययन किया और उसके आधार पर ऐतिहासिक नाटकों के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित किया। इन्होंने अल्पायु में ही श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। इनका सम्पूर्ण जीवन माँ भारती की आराधना में समर्पित था।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये महान् कवि, सफल नाटककार, उपन्यासकार, कुशल कहानीकार और श्रेष्ठ निबन्धकार थे। इनकी **कृतियाँ** निम्नलिखित हैं :

(i) नाटक–इनके प्रमुख नाटक चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, राज्यश्री, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, करुणालय, एक घूँट, सज्जन एवं प्रायश्चित आदि हैं।

(ii) कहानी संग्रह–प्रतिध्वनि, छाया, इन्द्रजाल, आकाशदीप तथा आँधी प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

(iii) काव्य–कामायनी (महाकाव्य), झरना, लहर, आँसू, महाराणा का महत्त्व, कानन कुसुम आदि प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ हैं।

(iv) उपन्यास–कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

(v) निबन्ध-संग्रह–'काव्य कला' और अन्य निबन्ध हैं।

प्रसादजी की भाषा शुद्ध, सरस, साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। एक-एक शब्द मोती की भाँति जड़ा हुआ है।

इनकी **शैली के विविध रूप** इस प्रकार हैं—

(i) वर्णनात्मक शैली–प्रसादजी ने अपने नाटकों, उपन्यासों एवं कहानियों में घटनाओं का वर्णन करते समय इस शैली को अपनाया है।

(ii) आलंकारिक शैली–प्रसादजी स्वभावतः कवि थे, अतः इनके गद्य में भी विविध अलंकारों का प्रयोग मिलता है।

(iii) भावात्मक शैली–भावों के चित्रण में प्रसादजी का गद्य भी काव्यमय हो जाता है। इसमें भाषा अलंकृत और काव्यमयी है। इनकी प्रायः सभी रचनाओं में इस शैली के दर्शन होते हैं।

(iv) चित्रात्मक शैली–प्रकृति वर्णन और रेखाचित्रों में यह शैली मिलती है।

(v) इसके अतिरिक्त सूक्ति शैली, संवाद शैली, विचारात्मक शैली एवं अनुसन्धानात्मक शैली का प्रयोग भी प्रसादजी ने किया है।

प्रस्तुत '**ममता**' शीर्षक कहानी में प्रसादजी ने भारतीय नारी के आदर्शों को स्थापित करते हुए उसकी बेबसी एवं दयनीय स्थिति का सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। ममता विपरीत परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए अपने कर्त्तव्य एवं धर्म का पालन करती है।

●●

ममता

(1)

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी–हिन्दू-विधवा संसार में सबसे निराश्रय प्राणी है– तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल-नाद में, अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह-पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्रायः होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा—"यह क्या है पिताजी?"

"तेरे लिए बेटी! उपहार है।"—कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया। स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी—

"इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया?"

"चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!"

"तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिये। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?"

"इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त-वंश का अन्त समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी।"

"हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ—इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

"मूर्ख है"—कहकर चूड़ामणि चले गये।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक्-धक् करने लगा। वह अपने को रोक न सका। उसने जाकर रोहतास-दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा—

"यह महिलाओं का अपमान करना है।"

बात बढ़ गयी। तलवारें खिंचीं, ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गयी ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

(2)

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खँडहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी—

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते—"

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा; परन्तु उस व्यक्ति ने कहा—"माता! मुझे आश्रय चाहिए।"

"तुम कौन हो?"—स्त्री ने पूछा।

"मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।"

"क्या शेरशाह से!" स्त्री ने अपने ओंठ काट लिये।

"हाँ, माता!"

"परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है। सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं, जाओ कहीं दूसरा आश्रय खोज लो!"

"गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है—इतना थका हुआ हूँ, इतना!"—कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी। उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी—"सब विधर्मी दया के पात्र नहीं—मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!" घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—"माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?" स्त्री विचार कर रही थी—"मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि-देव की उपासना—का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ.....नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं.....कर्त्तव्य करना है। तब?"

मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा—"क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो; ठहरो।"

"छल! नहीं तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।"

ममता ने मन में कहा—"यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली—"जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक। तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गयी। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खँडहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा—"मिरजा। मैं यहाँ हूँ।"

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा—"वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गयी। दिनभर उसमें से न निकली। सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है—"मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना; क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गये।

चौसा के मुगल-पठान-युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख-सुख की सहभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा—"मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गयी होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई!"

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा—"उसे बुलाओ।"

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा—"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी

के खोदे जाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ!''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया—

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनवाया।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

● **जयशंकर प्रसाद**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी—हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है—तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

(ख) ''हे भगवान! तब के लिए! विपद् के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस। पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ—इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।'' **(2019AC, 20MG)**

''मूर्ख है''—कहकर चूड़ामणि चले गये।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में किस कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है?

***अथवा* अपने पिता का कौन-सा कृत्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?**

(ग) ''गला सूख रहा है, साथी छूट गए हैं, अश्व गिर पड़ा है—इतना थका हुआ हूँ, इतना!'' कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, ''यह विपत्ति कहाँ से आई?'' उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी—''सब विधर्मी दया के पात्र नहीं—मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!'' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—''माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?'' स्त्री विचार कर रही थी–''मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना— का पालन करना चाहिए। परन्तु यहाँ.....नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं.....कर्त्तव्य करना है। तब?''

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) स्त्री किस धर्म के पालन के विषय में विचार कर रही थी?

(घ) ममता ने मन में कहा—"यहाँ कौन दुर्ग है? यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली–"जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक। तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता ने मुगल को क्यों आश्रय दिया?

(ङ) शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा—"वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गई। दिन-भर उसमें से न निकली। संध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है– "मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गए।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता क्यों भयभीत हुई?

(च) अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा–"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी के खोदे जाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।" **(2019AA)**

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गए।

अथवा मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह ..... चिर-विश्राम गृह जाती हूँ।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता ने अश्वारोही को क्या बताया?
(iv) आजीवन भयभीत रहने का कारण लिखिए।

2. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016 CB, CC, CE, CG, 17AF, AG, 18HA, HF, 19AA, AD, AE, AF, 20MG)**

3. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. कहानी में उल्लिखित घटनाओं की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में आपका क्या मत है?

6. 'ममता' कहानी के लिखने में लेखक का क्या उद्देश्य प्रतीत होता है? सही उत्तर चुन कर लिखिए—

(क) कल्पना-प्रसूत रोमांस का चित्रण करना।

(ख) हिन्दू विधवा की दयनीय दशा का चित्रण करना।

(ग) हिन्दू विधवा के आदर्श आचरण का उदाहरण रखना।

(घ) मुगल सरदार की कृतघ्नता को रेखांकित करना।

(ङ) एक ऐतिहासिक घटना को साहित्यिक रूप देना।

7. ममता की तुलना में उसके पिता का चरित्र आपको कैसा लगता है?

8. पठानों ने रोहिताश्व के दुर्ग पर विजय कैसे पायी?

9. ममता के पिता का क्या हाल हुआ?

10. हुमायूँ किस रूप में और किन परिस्थितियों में ममता की कुटिया पर प्रकट होता है?

11. ममता उसे शरण देने में क्यों हिचकती है?

12. हुमायूँ की किस उक्ति से ममता का उस पर विश्वास हो गया और उसने उसे अपनी कुटी में शरण दे दी?

13. अकबर के सरदारों ने उसके पिता की शरण-स्थली को अमर कैसे बनाना चाहा?

14. कहानी का मर्म-वेधी स्थल कहाँ आता है?

15. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

दुश्चिंता, पतनोन्मुख, दीपालोक, हताश, अश्वारोही।

16. कहानी के भाव-प्रवण स्थलों को चुनकर लिखिए।

17. मूर्खता, प्रसन्नता एवं पीलापन शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय बताइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

प्रकोष्ठ = राजप्रासाद या महल के मुख्य द्वार के पास का कमरा। **शोण** = सोन नदी, जो मध्य प्रदेश से निकलकर बिहार राज्य में गंगा से मिल जाती है। **वेदना** = दुःख। **दुहिता** = पुत्री। **म्लेच्छ** = असभ्य और गन्दा व्यक्ति, प्राचीन और मध्ययुग में विदेशियों के लिए प्रयुक्त शब्द, विदेशी। **उत्कोच** = घूस, रिश्वत। **तोरण** = किले का मुख्य फाटक। **धर्मचक्र** = महात्मा बुद्ध का धर्म-शिक्षारूपी चक्र। **विहार** = बौद्ध भिक्षुओं का आश्रम। **गुल्म** = झाड़ी। **प्राचीर** = परकोटा, चहारदीवारी। **अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते** = गीता में श्रीकृष्ण का कथन (जो भक्त अनन्य भावना से मेरा चिन्तन करते हैं, उपासना करते हैं, उनका योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ)। **चौसायुद्ध** = शेरशाह और हुमायूँ के बीच 1536 ई० में बिहार के चौसा नामक स्थान पर हुई लड़ाई। **ब्रह्माण्ड** = सम्पूर्ण सृष्टि। **वंशधर** = जो किसी वंश में उत्पन्न हुआ हो, वंशज। **मृगदाव** = हरिणों के रहने का स्थान, वाराणसी के निकट इसी स्थान पर बुद्धदेव ने अपने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया था। अब इसका नाम सारनाथ है। **उपक्रम** = कार्यक्रम, तैयारी। **जीर्ण कंकाल** = वृद्ध शरीर।

●●